राधा चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री राधे वृषभानुजा,

भक्तनि प्राणाधार।

वृन्दावनविपिन विहारिणी,

प्रणवों बारंबार॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

जैसौ तैसौ रावरौ,

कृष्ण प्रिया सुखधाम।

चरण शरण निज दीजिये,

सुन्दर सुखद ललाम॥

॥ चौपाई ॥

जय वृषभान कुँवरि श्री श्यामा,

कीरति नंदिनी शोभा धामा।

नित्य बिहारिनी श्याम अधारा,

अमित मोद मंगल दातारा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

रास विलासिनी रस विस्तारिनी,

सहचारि सुभग यूथमन भावनि।

नित्य किशोरी राधा गोरी,

श्याम प्राणधन अति जिय भोरी।

करुणा सागर हिय उमंगिनी,

ललितादिक सखियन की संगिनी।

दिन कर कन्या कूल बिहारिनी,

कृष्ण प्राण प्रिय हुलसावनि।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

नित्य श्याम तुमरौ गुण गावें,

राधा राधा कहि हरषावें।

मुरली में नित नाम उचारे,

तुव कारण प्रिया वृषभानु दुलारी।

नवल किशोरी अति छवि धामा,

द्युति लघु लगै कोटि रति कामा।

गौरांगी शशि निंदक बढ़ना,

सुभग चपल अनियारे नयना।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

जावक युग युग पंकज चरना,

नूपुर धुनि प्रीतम मन हरना।

संतत सहचरि सेवा करहीं,

महा मोद मंगल मन भरहीं।

रसिकन जीवन प्राण अधारा,

राधा नाम सकल सुख सारा।

अगम अगोचर नित्य स्वरूपा,

ध्यान धरत निशदिन ब्रज भूपा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

उपजेउ जासु अंश गुण खानी,

कोटिन उमा रमा ब्रह्मानी।

नित्यधाम गोलोक विहारिनी,

जन रक्षक दुख दोष नसावनि।

शिव अज मुनि सनकादिक नारद,

पारन पायें शेष अरु शारद।

राधा शुभ गुण रूप उजारी,

निरखि प्रसन्न होत बनवारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ब्रज जीवन धन राधा रानी,

महिमा अमित न जाय बखानी।

प्रीतम संग देई गलबाँही,

बिहरत नित्य वृन्दावन माँही।

राधा कृष्ण कृष्ण कहैं राधा,

एक रूप दोउ प्रीति अगाधा।

श्री राधा मोहन मन हरनी,

जन सुख दायक प्रफुलित बदनी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कोटिक रूप धरें नंद नन्दा,

दर्शन करन हित गोकुल चन्दा ।

रास केलि करि तुम्हें रिझावें,

मान करौ जब अति दुख पावें।

प्रफुलित होत दर्श जब पावें,

विविध भाँति नित विनय सुनावें।

वृन्दारण्य बिहारिनी श्यामा,

नाम लेत पूरण सब कामा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कोटिन यज्ञ तपस्या करहू,

विविध नेम व्रत हिय में धरहू।

तऊ न श्याम भक्तहिं अपनावे,

जब लगि राधा नाम न गावे।

वृन्दाविपिन स्वामिनी राधा,

लीला बपु तब अमित अगाधा।

स्वयं कृष्ण पावं नहिं पारा,

और तुम्हें को जानन हारा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

श्री राधा रस प्रीति अभेदा,

सारद गान करत नित वेदा।

राधा त्यागि कृष्ण को भेजिहैं,

ते सपनेहु जग जलधि न तरिहैं।

कीरति कुँवरि लाड़िली राधा,

सुमिरत सकल मिटहिं भव बाधा।

नाम अमंगल मूल नसावन,

त्रिविध ताप हर हरि मन भावन।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

राधा नाम लेइ जो कोई,

सहजहि दामोदर बस होई।

राम नाम परम सुखदाई,

भजतहिं कृपा करहिं यदुराई।

यशुमति नन्दन पीछे फिरिहैं,

जो कोउ राधा नाम सुमिरिहैं।

रास विहारिन श्याम प्यारी,

करहु कृपा बरसाने वारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

वृन्दावन है शरण तिहारौ,

जय जय जय वृषभानु दुलारी।

॥ दोहा ॥

श्रीराधासर्वेश्वरी,

रसिकेश्वर घनश्याम।

करहुँ निरंतर बास मैं,

श्रीवृन्दावन धाम॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा